Dr. Madan Paswan, History.
Class: B.A. Part-II (H) P-III.
Topic: Unit-II (a) Balban.

Lecture No. 16

Date: 10.11.2020

Continue Lecture of date 09.11.2020.

[B.] बलबन ने अपने राजत्व सिद्धान्त को प्रभावशाली बनाने के लिए अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में फारस की रहन-सहन और परंपराओं को अपनाया। गद्दी पर बैठने के बाद इसने ससानियों और ख्वारिज्मी शासकों के दरबार का स्वाधीनतापूर्वक अनुकरण किया तथा दरबारी शिष्टाचार पर बल दिया।

वह स्वयं सम्पूर्ण राजसी वैभव तथा उपकरणों के साथ ही दरबार में उपस्थित होता था। उसने दरबार की शोभा इस प्रकार की बनाई कि वह उसके राज्य की व्यवस्था, समृद्धि और वैभव को प्रतिबिंबित करें।

राज्यारोहण से पूर्व ही, जब हलाकू के प्रतिनिधि 1259 में भारत आए, तो बल्बन ने दरबार को वैभवपूर्ण ढंग से सुसज्जित किया। पुनः उसने अपने पौत्रों के नाम भी फारस के सम्राटों की भाँति —

(क) कैकुबाद,
(ख) कैखुसरो और
(ग) कैकाउस

रखे।

गद्दी पर बैठने के बाद बलबन ने अपनी सामाजिक समारोहों में होने वाले नृत्य, संगीत, मदपान सभी पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया।

उसने फारसी परंपरा का अनुसरण करते हुए अपने दरबार में 'सिजदा' (घुटने पर बैठकर सिर झुकाना) और 'पाबोस' (सुल्तान का पैर चूमना) को अपनाया जिसका पालन उन लोगों को पूरी तरह करना पड़ता था जिन्हें उसके समक्ष आने का विशेषाधिकार प्राप्त होता था।

दरबार में केवल वजीर ही उससे वार्तालाप कर सकता था।

[C] बलबन अपने निजी सेवकों के समक्ष भी अपनी भावनाएँ व्यक्त नहीं करता था। मंगोलों के विनाशकारी हमलों के प्रकोप से सुरक्षित होने के लिए अन्य देशों से विख्यात विद्वान और शाहजादे भारत आए।

बलबन ने उन्हें अपने दरबार में संरक्षण दिया जिससे विदेशों में मुस्लिम संस्कृति के संरक्षक के रूप में उसे ख्याति मिली। विदेशी राजदूत उसके दरबार की शान से प्रभावित होते थे। जब वह जुलूस में जाता था तो सैनिक चमकती तलवारें लेकर उसके साथ चलते थे।

Continue ...